कुरआने पाक सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई क़ाइ़दा

Madani Qaaida (Hindi)

म-दनी क़ाइ़दा

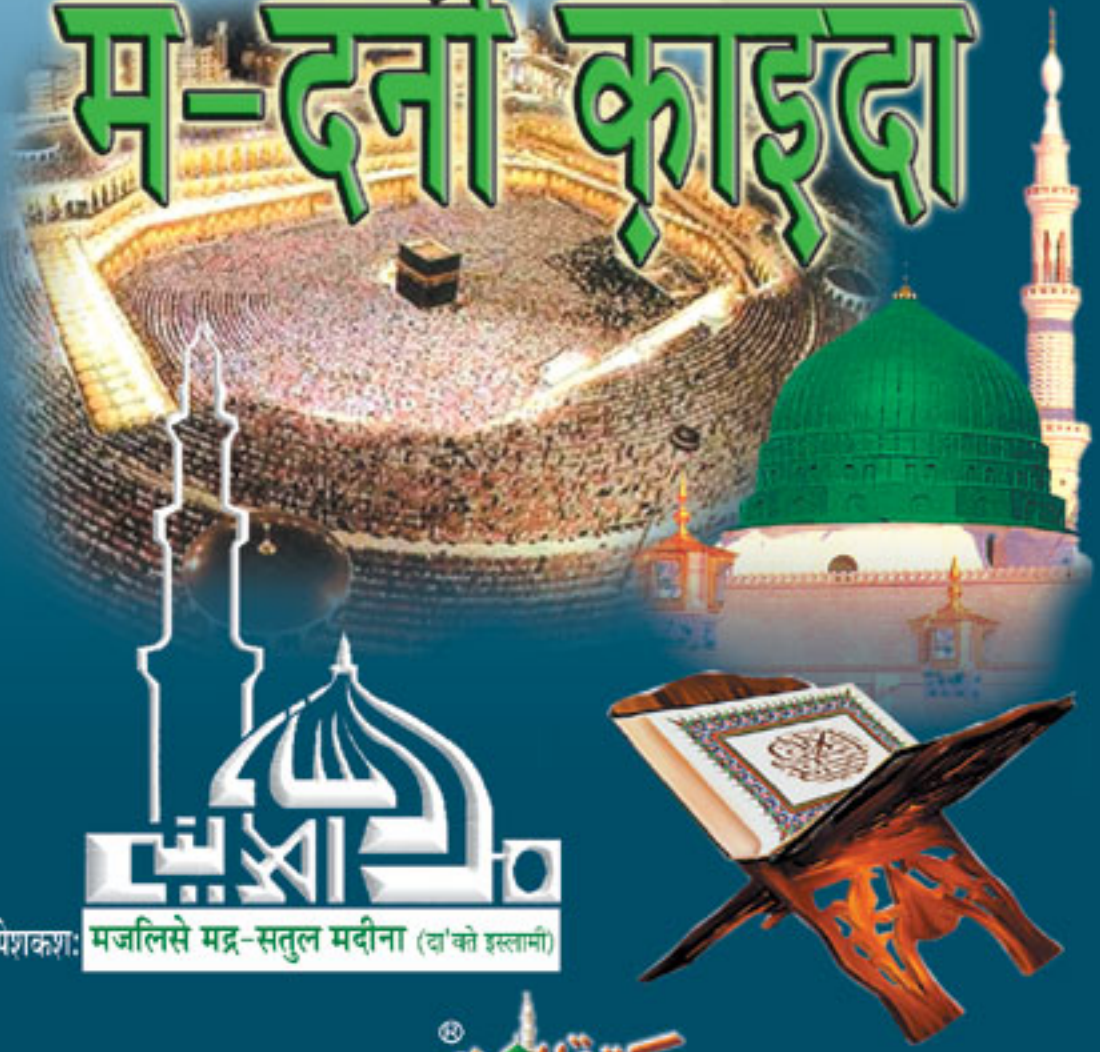

पेशकश: मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَاحَبِیْبَ اللّٰہ

क़ुरआने पाक सह़ीह़ मख़ारिज के साथ पढ़ने के लिये इब्तिदाई क़ाइ़दा

म-दनी क़ाइ़दा

पेशकश : मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला (**म-दनी क़ाइदा**)

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-**1**, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हुरूफ़ के मख़ारिज

मख़्रज का लुग़वी मा'ना "निकलने की जगह" है और इस्तिलाहे तज्वीद में जिस जगह से हर्फ़ अदा होता है उसे "मख़्रज" कहते हैं। मख़ारिज की ता'दाद के बारे में अइम्माए किराम के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं ह़ज़रते इमाम ख़लील बिन अह़मद फ़राहीदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और अक्सर अइम्माए किराम के नज़्दीक मख़ारिज की ता'दाद सत्तरह (17) है।

मख़्रज का नाम	हुरूफ़	हुरूफ़ के अल्क़ाब	मख़ारिज
ह़ल्क़ी मख़्रज	ء، ھ	हुरूफ़े ह़-लक़िय्यह	ह़ल्क़ के नीचे वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
" "	ع، ح	" "	ह़ल्क़ के दरमियान वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
" "	غ، خ	" "	ह़ल्क़ के ऊपर वाले ह़िस्से से अदा होते हैं।
लिसानी मख़ारिज	ق	हुरूफ़े ल-ह़विय्यह	ज़बान की जड़ और तालू के नर्म ह़िस्से से अदा होता है।
" "	ك	" "	ज़बान की जड़ और तालू के सख़्त ह़िस्से से अदा होता है।
" "	ج، ش، ی	हुरूफ़े श-जरिय्यह	ज़बान के दरमियान और तालू के दरमियान से अदा होते हैं।
" "	ض	ह़र्फ़े ह़ाफ़ियह	ज़बान की करवट और ऊपर की दाढ़ों की जड़ से अदा होता है।
" "	ل	हुरूफ़े त़्-रफ़िय्यह	ज़बान का कनारा और ज़वाहिक से सनाया तक के मसूढ़ों से अदा होता है।
" "	ن	" "	ज़बान का कनारा और अन्याब से सनाया तक के दांतों की जड़ों से अदा होता है।
" "	ر	" "	ज़बान की नोक और मुक़ाबिल के तालू से अदा होता है।
" "	ط، د، ت	हुरूफ़े निt़्इय्यह	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से अदा होते हैं।
" "	ظ، ذ، ث	हुरूफ़े लि-सविय्यह	ज़बान का सिरा और ऊपर के दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
" "	ص، ز، س	हुरूफ़े स-फ़ीरियह	ज़बान की नोक और दोनों दांतों के अन्दरूनी कनारे से अदा होते हैं।
श-फ़वी मख़ारिज	ف	हुरूफ़े श-फ़विय्यह	ऊपर के दांतों के कनारे और निचले होंट के तर ह़िस्से से अदा होता है।
" "	ب، م، و	" "	"ب" दोनों होंटों के तर ह़िस्से से, "م" दोनों होंटों के ख़ुश्क ह़िस्से से और "و" दोनों होंटों की गोलाई से अदा होता है।
जौफ़ी मख़्रज	हुरूफ़े मद्दा (ا، و، ی)		जौफ़े दहन : या'नी मुंह का ख़ला।
ख़ैशूम (नाक का बांसा)			येह गुन्ना का मख़्रज है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।)

त़ालिबे ग़मे
मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

म-दनी मक़्सद : मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

नाम _____

मद्रसा _____

द-रजा नम्बर _____

पता _____

_____ फ़ोन नम्बर _____

पहले इसे पढ़िये

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए
तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

कुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद, अल्लाह तआ़ला का ऐसा कलाम है जो कि रुश्दो हिदायत और इ़ल्मो ह़िक्मत का अनमोल ख़ज़ाना है। **नबिय्ये मुकर्रम**, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَ عَلَّمَهٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है, जिस ने कुरआन को सीखा और दूसरों को सिखाया।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیر کم.....الخ، الحدیث ۵۰۲۷، ص ۴۳۵)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तह़्त ता'लीमे **कुरआने पाक** को आ़म करने के लिये अन्दरून व बैरूने मुल्क ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा के 2257 मदारिस बनाम "**मद्र-सतुल मदीना**" क़ाइम हैं। मुल्के मुर्शिद में ता दमे तह़रीर कमो बेश 107000 (एक लाख सात हज़ार) मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियों को ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जा रही है। इसी त़रह़ मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उ़मूमन रोज़ाना बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते, दुआऐं याद करते हैं नीज़ नमाज़ों और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। इ़लावा अज़ीं ब शुमूल मुल्के मुर्शिद दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ात) भी क़ाइम किये जाते हैं। अक्तूबर 2016 की कारकर्दगी के मुत़ाबिक़ फ़क़त़ **बाबुल मदीना** में इस्लामी बहनों के 994 (नव सो चोरानवे) मद्रसे तक़रीबन रोज़ाना क़ाइम होते हैं जिन में 9915 (नव हज़ार नव सो पन्दरह) इस्लामी बहनें कुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआ़एं याद करती हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **मद्र-सतुल मदीना** के तजरिबा कार असातिज़ए किराम ने **कुरआने पाक** को आसान अन्दाज़ में सीखने के लिये **म-दनी क़ाइदा** मुरत्तब किया है । **''म-दनी क़ाइदा''** में छोटी और बड़ी उम्र के त़-लबा व त़ालिबात के लिये तज्वीद के बुन्यादी क़वाइद ह़त्तल इम्कान आसान अन्दाज़ में पेश किये गए हैं ताकि म-दनी मुन्ने, म-दनी मुन्नियां और इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आसानी से दुरुस्त कुरआने पाक पढ़ना सीख जाएं। जय्यिद कुर्रा ह़ज़रात (کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) ने इल्मे तज्वीद के ह़वाले से बहुत एह़तियात़ के साथ **म-दनी क़ाइदा** पर नज़रे सानी फ़रमाई है।

म-दनी क़ाइदा के त़रीक़ए तदरीस के लिये **रहनुमाए मुदर्रिसीन** भी मुरत्तब की गई है, जिस में अस्बाक़ पढ़ाने का त़रीक़ए कार तफ़्सील के साथ बताया गया है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाइदा की **V.C.D दा'वते इस्लामी** के इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से जारी की गई है, जिस से येह **म-दनी क़ाइदा** समझ कर कुरआने पाक पढ़ने में मज़ीद आसानी होगी।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा इस म-दनी मक़्सद **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **''** के तह़्त अपनी इस्लाह़ के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मजलिसे मद्र-सतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

29 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1428 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (1) : हुरूफ़े मुफ़रदात

- हुरूफ़े मुफ़रदात या'नी हुरूफ़े तहज्जी 29 हैं।
- हुरूफ़े मुफ़रदात को तज्वीद व क़िराअत के मुताबिक़ अ-रबी लहजे में अदा करें उर्दू तलफ़्फ़ुज़ से परहेज़ करें या'नी بَا، تَا، ثَا، حَا، خَا، طَا، ظَا بے، تے، ٹے، حے، خے، طوئے، ظوئے वग़ैरा हरगिज़ न पढ़ें बल्कि पढ़ें।
- इन 29 हुरूफ़ में सात "7" हुरूफ़ ऐसे हैं जो हर हालत में पुर या'नी मोटे पढ़े जाते हैं इन्हें हुरूफ़े मुस्ता'लिया कहते हैं और वोह येह हैं خ ص ض ط ظ غ ق इन का मज्मूआ خُصَّ ضَغْطٍ قِظْ है।
- होंटों से सिर्फ़ चार हुरूफ़ अदा होते हैं। ب ف م و। इन के इलावा बाक़ी हुरूफ़ पर होंट न हिलने दें।
- इन तीन हुरूफ़ ز س ص को अदा करते वक़्त सीटी की तरह तेज़ आवाज़ निकलती है इस लिये इन हुरूफ़ को हुरूफ़े सफ़ीरिया या'नी सीटी वाले हुरूफ़ कहते हैं।

ا (اَلِفْ)	ب (بَا)	ت (تَا)	ث (ثَا)	ج (جِيْمْ)
ح (حَا)	خ (خَا)	د (دَالْ)	ذ (ذَالْ)	ر (رَا)
ز (زَا)	س (سِيْنْ)	ش (شِيْنْ)	ص (صَادْ)	ض (ضَادْ)
ط (طَا)	ظ (ظَا)	ع (عَيْنْ)	غ (غَيْنْ)	ف (فَا)
ق (قَافْ)	ك (كَافْ)	ل (لَامْ)	م (مِيْمْ)	ن (نُوْنْ)
و (وَاوْ)	ھ (ھَا)	ء (هَمْزَهْ)	ى (يَا)	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (2) : हुरूफ़े मुरक्कबात

- दो "2" या इस से ज़ाइद हुरूफ़ मिल कर एक मुरक्कब बनता है।
- मुरक्कब हुरूफ़ को मुफ़्रद हुरूफ़ की त़रह़ अलग अलग पढ़ें।
- इस सबक़ में भी तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखते हुए मा'रूफ़ या 'नी अ़-रबी लहजे में पढ़ें।
- जब दो या इस से ज़ाइद हुरूफ़ मिला कर लिखे जाते हैं तो उन की शक्ल कुछ बदल जाती है अक्सर हुरूफ़ का सर लिखा जाता है और धड़ छोड़ दिया जाता है।
- जो हुरूफ़ मुरक्कब होने की ह़ालत में एक जैसे लिखे जाते हैं उन की नुक़्तों के रद्दो बदल से पहचान करें।

تا	نا	با	لا	لا	ا
قا	فا	سا	شا	ثا	يا
صا	غا	عا	حا	خا	جا
كا	ها	ما	ظا	طا	ضا
طب	كف	كث	كت	كب	لب
قل	فل	ضل	صل	شل	سل
ظن	طن	كن	كل	غل	عل

جد	خد	حد	عد	غد	خذ
خز	حر	بر	یر	طر	ظر
بم	نم	تم	یم	ثم	شم
لج	عج	جج	بج	بع	یغ
نص	فص	قض	بس	یس	تس
فق	قق	شق	سق	عق	حق
لك	فك	قك	كو	هو	مو
بی	نی	تی	یی	ؤ	ئ
بة	نة	تة	یة	عط	فظ
بلب	بہم	بعد	عبد	حمد	هلك
یهب	خطف	ثمن	حسن	فئة	سخط

خلق	فلق	علق	نصر	قتل	یلج
تجد	طبع	بلغ	نفس	جنت	سئل
قسط	صفت	شمس	خشی	غیر	غبر
مطر	عشر	عسر	ظلل	شکر	بسم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (3) : ह़-रकात

- ह़-र-कत की जम्अ़ ह़-रकात है। ज़बर ـَ, ज़ेर ـِ और पेश ـُ को ह़-रकात कहते हैं। ज़बर और पेश ह़र्फ़ के ऊपर जब कि ज़ेर ह़र्फ़ के नीचे होता है।
- जिस ह़र्फ़ पर कोई ह़-र-कत हो उसे मु-तह़र्रिक कहते हैं।
- ज़बर ـَ मुंह और आवाज़ को खोल कर, ज़ेर ـِ आवाज़ को नीचे गिरा कर और पेश ـُ होंटों को गोल कर के अदा करें।
- ह़-रकात को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ें।
- "الف" पर कोई ह़-र-कत या जज़्म आ जाए तो उसे हम्ज़ह "اَ اِ اُ" पढ़ें।
- "ر" पर ज़बर या पेश हो तो ر को पुर और "ر" के नीचे ज़ेर हो तो "ر" को बारीक पढ़ें।

بُ	بِ	بَ	اُ	اِ	اَ
ثُ	ثِ	ثَ	تُ	تِ	تَ

جَ	جِ	جُ	حَ	حِ	حُ
خَ	خِ	خُ	دَ	دِ	دُ
ذَ	ذِ	ذُ	رَ	رِ	رُ
زَ	زِ	زُ	سَ	سِ	سُ
شَ	شِ	شُ	صَ	صِ	صُ
ضَ	ضِ	ضُ	طَ	طِ	طُ
ظَ	ظِ	ظُ	عَ	عِ	عُ
غَ	غِ	غُ	فَ	فِ	فُ
قَ	قِ	قُ	كَ	كِ	كُ
لَ	لِ	لُ	مَ	مِ	مُ
نَ	نِ	نُ	وَ	وِ	وُ

هَ هِ هُ عَ عِ عُ

ىَ ىِ ىُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (4)

- इस सबक़ को रवां पढ़ें ।
- ह़-रकात की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- ह़ुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें ।
- ह़ुरूफ़े क़रीबुस्सौत सोलह "16" हैं । (ت،ط)،(ز،ذ،ظ)،(ث،س،ص)،(د،ض)، (ك،ق)،(ه،ح)،(ء،ع)

تَ تِ تُ طَ طِ طُ

زَ زِ زُ ذَ ذِ ذُ

ظَ ظِ ظُ ثَ ثِ ثُ

سَ سِ سُ صَ صِ صُ

دَ دِ دُ ضَ ضِ ضُ

كَ كِ كُ قَ قِ قُ

حُ	حِ	حَ	هُ	هِ	هَ
عُ	عِ	عَ	عُ	عِ	عَ
عُ	عِ	عَ	خُ	خِ	خَ
مُ	مِ	مَ	بُ	بِ	بَ
فُ	فِ	فَ	وُ	وِ	وَ
نُ	نِ	نَ	لُ	لِ	لَ
جُ	جِ	جَ	رُ	رِ	رَ
یُ	یِ	یَ	شُ	شِ	شَ

یَا خَبِیْرُ

سुन्नतों का पाबन्द और नेक बनने के लिये चलते फिरते पढ़ते रहें।

(मसाइलुल क़ुरआन, स. 290)

इल्म के पांच द-रजात

(1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना
(4) जो सीखा उस पर अ़मल करना (5) जो इल्म ह़ासिल हो उसे दूसरों तक पहुंचाना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (5) : तन्वीन

- दो ज़बर ـً, दो ज़ेर ـٍ और दो पेश ـٌ को तन्वीन कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर तन्वीन हो उसे मुनव्वन कहते हैं।
- तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आख़िर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की त़रह़ होती है। जैसे : اً = اَنْ ، اٍ = اِنْ ، اٌ = اُنْ
- तन्वीन के हिज्जे इस त़रह़ करें مًا : میم दो ज़बर مَنْ , مٍ : میم दो ज़ेर مِنْ , مٌ : میم दो पेश مُنْ = مًا ، مٍ ، مٌ
- ज़बर की तन्वीन के बा'द कहीं "ا" और कहीं "ى" लिखा जाता है हिज्जे करते वक़्त उस का नाम न लें।

طٌ	طٍ	طًا	ةٌ	تٍ	تًا
ذٌ	ذٍ	ذًا	زٌ	زٍ	زًا
ثٌ	ثٍ	ثًا	ظٌ	ظٍ	ظًا
صٌ	صٍ	صًا	سٌ	سٍ	سًا
ضٌ	ضٍ	ضًا	دٌ	دٍ	دًى

كَا	كِ	كُ	قَا	قِ	قُ
هَا	هِ	هُ	حَا	حِ	حُ
ءَ	ءِ	ءُ	عَا	عِ	عُ
خَا	خِ	خُ	غَا	غِ	غُ
بَا	بِ	بُ	مَا	مِ	مُ
وَا	وِ	وُ	فَا	فِ	فُ
لَا	لِ	لُ	نَا	نِ	نُ
رَا	رِ	رُ	جَا	جِ	جُ
شَا	شِ	شُ	یَ	یِ	یُ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (6)

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें ।
- ह़-रकात, तन्वीन और तमाम ह़ुरूफ़ बिल ख़ुसूस ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया की दुरुस्त अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें ।
- हिज्जे इस त़रह़ करें : مَلِكٌ : मीम ज़बर مَ , लाम ज़ेर لِ = مَلِ, काफ दो पेश كٌ = مَلِكٌ

نَزَلَ	خَلَقَ	صَدَقَ	يَدَكَ	بَلَغَ	طَبَعَ
جَعَلَ	فَعَلَ	نَظَرَ	ذَكَرَ	كَسَبَ	اِبِلِ
رُسُلُ	صُحُفُ	ثُلُثُ	سُدُسُ	حُرُمُ	رُبُعُ
حَمِدَ	خَطِفَ	مَلِكِ	تَزِدِ	تَجِدُ	يَلِجُ
قُتِلَ	سُئِلَ	قُرِئَ	قَمَرِ	كِبَرُ	حُشِرَ
اَحَدًا	مَرَضًا	عَمَلًا	هُدًى	طُوًى	قُرًى
مَسَدٍ	ثَمَنٍ	سَخَطٍ	ظُلَلٍ	فِئَةٍ	عُنُقٍ
نَفَرٌ	صَمَدٌ	غَضَبٌ	لَعِبٌ	اُذُنٌ	كُتُبٌ

قَتَرَةٌ	شَجَرَةٌ	سَفَرَةٍ	عَلَقَةٍ	قِرَدَةٌ	دَرَجَةٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (7) : हुरूफ़े मद्दह

- इस अ़लामत "ـْ" को जज़्म कहते हैं। जिस ह़र्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- साकिन ह़र्फ़ अपने से पहले मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- हुरूफ़े मद्दा तीन हैं। الف ، واو ، یا ـ
- الف से पहले ज़बर हो तो الف मद्दा होगा जैसे بَا, واو साकिन " وْ " से पहले पेश हो तो واو मद्दा होगा जैसे بُوْ, یا साकिन " یْ " से पहले ज़ेर हो तो یا मद्दा होगा जैसे بِیْ
- हुरूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- हिज्जे इस त़रह़ करें। بَا : با الف ज़बर بَا, بُوْ : با واو पेश بُوْ, بِیْ : با یا ज़ेर بِیْ = بَا ، بُوْ ، بِیْ

تِیْ	تُوْ	تَا	بِیْ	بُوْ	بَا
جِیْ	جُوْ	جَا	ثِیْ	ثُوْ	ثَا
خِیْ	خُوْ	خَا	حِیْ	حُوْ	حَا
ذِیْ	ذُوْ	ذَا	دِیْ	دُوْ	دَا
زِیْ	زُوْ	زَا	رِیْ	رُوْ	رَا
شِیْ	شُوْ	شَا	سِیْ	سُوْ	سَا

صَا	صُوْ	صِیْ	ضَا	ضُوْ	ضِیْ
طَا	طُوْ	طِیْ	ظَا	ظُوْ	ظِیْ
عَا	عُوْ	عِیْ	غَا	غُوْ	غِیْ
فَا	فُوْ	فِیْ	قَا	قُوْ	قِیْ
کَا	کُوْ	کِیْ	لَا	لُوْ	لِیْ
مَا	مُوْ	مِیْ	نَا	نُوْ	نِیْ
وَا	وُوْ	وِیْ	ھَا	ھُوْ	ھِیْ
اَا	اُوْ	اِیْ	یَا	یُوْ	یِیْ

یَا عَلِیْمُ

21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पियें (या पिलाएं) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (पीने वाले का) ह़ाफ़िज़ा रोशन हो जाएगा। (श-ज-रए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या, स. 46)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सबक़ नम्बर (8) : खड़ी ह़-रकात

- खड़े ज़बर ـٰـ , खड़े ज़ेर ـٖـ और उल्टे पेश ـٗـ को खड़ी ह़-रकात कहते हैं।
- खड़ी ह़-रकात ह़ुरूफ़े मद्दा के क़ाइम मक़ाम हैं इस लिये खड़ी ह़-रकात को भी ह़ुरूफ़े मद्दा की त़रह़ एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ें।
- इस सबक़ में भी ह़ुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले ह़ुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें।

طٗ	طٖ	طٰ	تٗ	تٖ	تٰ
ذٗ	ذٖ	ذٰ	زٗ	زٖ	زٰ
ثٗ	ثٖ	ثٰ	ظٗ	ظٖ	ظٰ
صٗ	صٖ	صٰ	سٗ	سٖ	سٰ
ضٗ	ضٖ	ضٰ	دٗ	دٖ	دٰ
قٗ	قٖ	قٰ	كٗ	كٖ	كٰ
حٗ	حٖ	حٰ	ھٗ	ھٖ	ھٰ

عُ	عِ	عَ	اُ - عُ	اِ - عِ	اَ - عَ
غُ	غِ	غَ	خُ	خِ	خَ
مُ	مِ	مَ	بُ	بِ	بَ
فُ	فِ	فَ	وُ	وِ	وَ
نُ	نِ	نَ	لُ	لِ	لَ
جُ	جِ	جَ	رُ	رِ	رَ
ىُ	ىِ	ىَ	شُ	شِ	شَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (9) : हुरूफ़े लीन

- हुरूफ़े लीन दो (2) हैं واؤ और یا ।
- واؤ साकिन से पहले ज़बर हो तो واؤ लीन होगा जैसे جَوْ, یا साकिन से पहले ज़बर हो तो یا लीन होगा जैसे جَیْ ।
- हुरूफ़े लीन को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ें ।
- हिज्जे इस त़रह करें । بَوْ: بَا وَاؤ ज़बर بَوْ , تَیْ: تَا یَا ज़बर تَیْ = بَوْتَیْ

بَوُ	بَیُ	تَوُ	تَیُ	ثَوُ	ثَیُ
جَوُ	جَیُ	حَوُ	حَیُ	خَوُ	خَیُ
دَوُ	دَیُ	ذَوُ	ذَیُ	رَوُ	رَیُ
زَوُ	زَیُ	سَوُ	سَیُ	شَوُ	شَیُ
صَوُ	صَیُ	ضَوُ	ضَیُ	طَوُ	طَیُ
ظَوُ	ظَیُ	عَوُ	عَیُ	غَوُ	غَیُ
فَوُ	فَیُ	قَوُ	قَیُ	کَوُ	کَیُ
لَوُ	لَیُ	مَوُ	مَیُ	نَوُ	نَیُ
وَوُ	وَیُ	هَوُ	هَیُ	اَوُ	اَیُ
		یَوُ	یَیُ		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (10)

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें।
- इस सबक़ में पिछले तमाम अस्बाक़ या'नी ह़-रकात, तन्वीन, ह़ुरूफ़े मद्दा, खड़ी ह़-रकात और ह़ुरूफ़े लीन शामिल हैं।
- इन तमाम क़वाइद की अदाएगी और पहचान की पुख़्तगी के साथ साथ सिह़्ह़ते लफ़्ज़ी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस ह़ुरूफ़े मुस्ता'लिया।
- हिज्जे करते वक़्त इस बात का ख़याल रखें कि हर ह़र्फ़ को पिछले ह़ुरूफ़ से मिलाते जाएं। जैसे مَوْضُوْعَةٌ के हिज्जे इस त़रह़ करें :
- وَاو مِيْم ज़बर مَوْ, وَاو ضَاد पेश ضُوْ = مَوْضُوْ, عَيْن ज़बर عَ = مَوْضُوْعَ, ت दो पेश ةٌ = مَوْضُوْعَةٌ

قَالَ	صِرَاطَ	هٰذَا	ذٰلِكَ	كَانُوْا	قَالُوْا
لَهٗ	سَوْفَ	قَوْلُ	فِيْهِ	نُوْحِيْهِ	بِهٖ
لَيْسَ	بَيْنَ	عَذَابًا	مَتَاعًا	طَغٰى	شَكُوْرًا
غَفُوْرًا	دَاوٗدَ	خَوْفٍ	يَوْمٍ	قِيْلَ	حِيْلَ
رُسُلِهٖ	رَسُوْلِهٖ	اِلَيْهِ	عَلَيْهِ	صَوَابًا	مَاٰبًا
صَلٰوةً	زَكٰوةً	رَسُوْلٍ	مَحْفُوْظٍ	مَقَامُهٗ	خِتٰمُهٗ

لَوۡحٍ	حَوۡلٍ	دِيۡنٌ	بَشِيۡرٌ	قَوۡمِهٖ	هَدَيۡنَا
بَيۡنَنَا	زَاهِدِيۡنَ	رَاكِعُوۡنَ	عِيۡسٰى	مُوۡسٰى	صُدُوۡرِ
اُوۡلٰى	قَوۡلًا	قَوۡمًا	مِيۡقَاتًا	مُنِيۡرًا	شَيۡءٍ
شَيۡئًا	هٰرُوۡنَ	سُلَيۡمٰنَ	شُهُوۡدٌ	قُعُوۡدٌ	وَدُوۡدٌ
يَوۡمَئِذٍ	مَوۡعِدُهٗ	كَرِيۡمٍ	وَكِيۡلٍ	نُوۡرِهٖ	اَرَءَيۡتَ
اَفَرَءَيۡتَ	مَوۡعِظَةٌ	مَوۡضُوۡعَةٌ	مَوۡءٗدَةٌ	سَمِيۡعٌ	عَزِيۡزٌ
يَدَيۡهِ	حَيۡثُ	غَيۡبُ	سَمٰوٰتٍ	كَلِمٰتٍ	لَشَيۡءٌ
قُرَيۡشٍ	بِاٰيٰتِنَا	مِهٰدًا	عٰلِمُ	كِتٰبٌ	سَلٰمٌ
اُوۡذِيۡنَا	اُوۡتِيۡنَا	اَوۡحَيۡنَا	نُوۡحِيۡهَا	اٰتُوۡنِيۡ	اَمۡنُوۡابِيۡ
تُدِيۡرُوۡنَهَا	فَلَاتَمِيۡلُوۡا	مَاخَلَفۡتُمُوۡنِيۡ	فَلَاتَلُوۡمُوۡنِيۡ	وَلَايَحِيۡطُوۡنَ	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर२ (11) : सुकून (जज़्म)

- जैसा कि आप पीछे पढ़ चुके हैं इस अ़लामत "ـْـ" को जज़्म कहते हैं जिस हर्फ़ पर जज़्म हो उसे साकिन कहते हैं।
- जज़्म वाला हर्फ़ अपने से पहले मु-तहर्रिक हर्फ़ से मिल कर पढ़ा जाता है।
- हम्ज़ए साकिना (اَ، اِ، اُ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ें।
- हुरूफ़े क़ल्क़ला पांच हैं ق، ط، ب، ج، د इन का मज्मूआ قُطْبُ جَدٍّ है।
- क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश और ह-र-कत के हैं इन हुरूफ़ के अदा करते वक़्त मख़रज में जुम्बिश सी हो जिस की वज्ह से आवाज़ लौटती हुई निकले।
- जब हुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा।
- इस सबक़ में हुरूफ़े क़ल्क़ला व हम्ज़ए साकिना की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें और मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क़ करें।

اَتْ	اِتْ	اُتْ	اَطْ	اِطْ	اُطْ
اَزْ	اِزْ	اُزْ	اَذْ	اِذْ	اُذْ
اَظْ	اِظْ	اُظْ	اَثْ	اِثْ	اُثْ
اَسْ	اِسْ	اُسْ	اَصْ	اِصْ	اُصْ
اَدْ	اِدْ	اُدْ	اَضْ	اِضْ	اُضْ

اَكْ	اِكْ	اُكْ	اَقْ	اِقْ	اُقْ
اَهْ	اِهْ	اُهْ	اَحْ	اِحْ	اُحْ
اَعْ	اِعْ	اُعْ	اَعْ	اِعْ	اُعْ
اَخْ	اِخْ	اُخْ	اَغْ	اِغْ	اُغْ
اَبْ	اِبْ	اُبْ	اَمْ	اِمْ	اُمْ
اَوْ	وآو साकिन से पहले ज़ेर नहीं आता	اُوْ	اَفْ	اِفْ	اُفْ
اَلْ	اِلْ	اُلْ	اَنْ	اِنْ	اُنْ
اَرْ	اِرْ	اُرْ	اَجْ	اِجْ	اُجْ
اَشْ	اِشْ	اُشْ	اَىْ	اِىْ	یا साकिन से पहले पेश नहीं आता

मश्क़

قُلْ	اِنْ	عَنْ	مَنْ	بَلْ

لَمْ	كُمْ	هُمْ	ذُقْ	قَدْ
اِصْطَبِرْ	مُسْتَطَرٌ	فَاغْفِرْ	اَعْيُنٍ	اَعْنَابًا
زَجْرَةٌ	نُطْفَةٍ	مُدْهِنُوْنَ	اَبْوَابًا	فَافْرُقْ
يُقْرِضُ	يُغْنِيْ	تَجْرِيْ	جَمْعًا	فَتْحٌ
مُؤْمِنِيْنَ	مُؤْمِنُوْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	مُؤْصَدَةٌ	اِقْرَاْ
شَاْنٌ	كَاْسًا	بِئْسَ	يَشَاْ	نَشَاْ
اِثْمٌ	يَبْحَثُ	اَحْيَا	اُخْرٰى	اِذْهَبْ
اُشْدُدْ	اِرْكَبْ	حُشِرَتْ	نُشِرَتْ	اُحْضِرَتْ
طُمِسَتْ	فُرِجَتْ	نُسِفَتْ	يُظْلَمُوْنَ	يَظْهَرُ
اِصْبِرْ	بَيْنَكُمْ	بَيْنَهُمْ	فَضْلِكَ	عَلَيْهِمْ
اَعْمَالَهُمْ	اَعْمَالَكُمْ	اَيْدِيْهِمْ	يَسْتَبْدِلْ	يَسْتَفْتِحُوْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (12) : नून साकिन और तन्वीन (इज़्हार, इख़्फ़ा)

- नून साकिन और तन्वीन के चार क़ाइदे हैं (1) इज़्हार (2) इख़्फ़ा (3) इदग़ाम (4) इक़्लाब ।
- (1) इज़्हार : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े हल्क़ी में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इज़्हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना नहीं करेंगे । हुरूफ़े हल्क़ी छ "6" हैं और वोह येह हैं :

ء، ھ، ع، ح، غ، خ

- (2) इख़्फ़ा : नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़्फ़ा में से कोई हर्फ़ आ जाए तो इख़्फ़ा करें या'नी नून साकिन और तन्वीन में ग़ुन्ना कर के पढ़ें । हुरूफ़े इख़्फ़ा पन्दरह "15" हैं और वोह येह हैं :

ت، ث، ج، د، ذ، ز، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ف، ق، ك

- नोट : इदग़ाम और इक़्लाब के क़ाइदे सबक़ नम्बर 14 में मौजूद हैं ।

مِنْ اَجَلٍ	مِنْ هَادٍ	مِنْ عَلَقٍ	مِنْ حَكِيْمٍ
مِنْ غَفُوْرٍ	مِنْ خَوْفٍ	فَمَنْ تَبِعَ	مِنْ ثَمَرَةٍ
مِنْ جُوْعٍ	مِنْ دُوْنِكُمْ	مِنْ ذَهَبٍ	فَاِنْ زَلَلْتُمْ
مَنْ سَفِهَ	مَنْ شَكَرَ	مِنْ صَاصَالٍ	اِنْ ضَلَلْتُ
مِنْ طِيْنٍ	مَنْ ظَلَمَ	مِنْ فُرُوْجٍ	مِنْ قَبْلُ
مِنْ كُتُبٍ	يَنْئَوْنَ	مِنْهُمْ	اَنْعَمْتَ

وَانْحَرْ	فَسَيُنْغِضُوْنَ	وَالْمُنْخَنِقَةُ	اَنْتَ
تَنْسَوْنَ	نُنْشِزُهَا	يَنْصُرُوْنَ	مَنْضُوْدٍ
يَنْطِقُوْنَ	اُنْظُرْ	اَنْفُسِكُمْ	يَنْقُضُوْنَ
مِنْكُمْ	عَذَابًا اَلِيْمًا	خَيْرٍ تَجِدُوْهُ	عَدْنٍ تَجْرِيْ
بَلَدًا اٰمِنًا	قَوْلًا ثَقِيْلًا	شِهَابٌ ثَاقِبٌ	
نُوْحًا هَدَيْنَا	فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ	خَلْقٍ جَدِيْدٍ	
جُرُفٍ هَارٍ	كَاْسًا دِهَاقًا	بِخُسٍ دَرَاهِمَ	
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ	سِرَاعًا ذٰلِكَ	يَتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ	
خُلُقٍ عَظِيْمٍ	صَعِيْدًا زَلَقًا	يَوْمَئِذٍ زُرْقًا	
قَرْضًا حَسَنًا	قَوْلًا سَدِيْدًا	بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ	
مُلْقٍ حِسَابِيَهْ	بَاْسٍ شَدِيْدٍ	عَذَابٌ شَدِيْدٌ	

قَوْمًا غَيْرَكُمْ	عَمَلًا صَالِحًا	رِجَالٌ صَدَقُوْا
قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ	عَذَابًا ضِعْفًا	مُسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ
عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ	سَبْحًا طَوِيْلًا	سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا
رَفْرَفٍ خُضْرٍ	سَحَابٌ ظُلُمٰتٌ	نَفْسٍ ظَلَمَتْ
قَوْمًا فَاسِقِيْنَ	سُبُلًا فِجَاجًا	ثَمَنًا قَلِيْلًا
فَتْحٌ قَرِيْبٌ	رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ	كِرَامًا كَاتِبِيْنَ

يَا سَمِيْعُ

100 बार रोज़ाना जो पढ़े और इस दौरान गुफ़्त-गू न करे और पढ़ कर दुआ मांगे।

اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो मांगेगा पाएगा।

(40 रूहानी इलाज, स. 7)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (13) : तश्दीद

- तीन दन्दान " ـّـ " वाली शक्ल को तश्दीद कहते हैं। जिस हर्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।
- मुशद्दद हर्फ़ को दो मर्तबा पढ़ें एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तहर्रिक हर्फ़ से मिला कर और दूसरी मर्तबा ख़ुद अपनी ह-र-कत के मुताबिक़ ज़रा रुक कर।
- नून मुशद्दद और मीम मुशद्दद में हमेशा ग़ुन्ना होता है ग़ुन्ना के मा'ना नाक में आवाज़ ले जाना है ग़ुन्ना की मिक़्दार एक अलिफ़ के बराबर है।
- जब हुरूफ़े क़ल्क़ला मुशद्दद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करें।
- पहला हर्फ़ मु-तहर्रिक, दूसरा हर्फ़ साकिन और तीसरा हर्फ़ मुशद्दद हो तो अक्सर मर्तबा (हमेशा नहीं) साकिन हर्फ़ को छोड़ देंगे और मु-तहर्रिक हर्फ़ को मुशद्दद हर्फ़ से मिला कर पढ़ेंगे जैसे عَبَدْتُّمْ (को عَبَتُّمْ पढ़ेंगे)
- इस सबक़ में तश्दीद की मश्क़ के साथ साथ हुरूफ़े क़रीबुल्मख़ारज या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह फ़र्क़ करें।

اَتَّ	اِتَّ	اُتَّ	اَطَّ	اِطَّ	اُطَّ
اَزَّ	اِزَّ	اُزَّ	اَذَّ	اِذَّ	اُذَّ
اَظَّ	اِظَّ	اُظَّ	اَثَّ	اِثَّ	اُثَّ
اَسَّ	اِسَّ	اُسَّ	اَصَّ	اِصَّ	اُصَّ
اَدَّ	اِدَّ	اُدَّ	اَضَّ	اِضَّ	اُضَّ
اَكَّ	اِكَّ	اُكَّ	اَقَّ	اِقَّ	اُقَّ

اَهَّ	اِهَّ	اُهَّ	اَحَّ	اِحَّ	اُحَّ
اَعَّ	اِعَّ	اُعَّ	اَخَّ	اِخَّ	اُخَّ
اَبَّ	اِبَّ	اُبَّ	اَمَّ	اِمَّ	اُمَّ
اَوَّ	اِوَّ	اُوَّ	اَفَّ	اِفَّ	اُفَّ
اَلَّ	اِلَّ	اُلَّ	اَنَّ	اِنَّ	اُنَّ
اَرَّ	اِرَّ	اُرَّ	اَجَّ	اِجَّ	اُجَّ
اَشَّ	اِشَّ	اُشَّ	اَیَّ	اِیَّ	اُیَّ
رَبِّ	رَبِّیْ	رَبِّهٖ	اِنَّ	اِنَّا	اِنِّیْ
مِنَّا	مِنِّیْ	ثُمَّ	وَلَمَّا	حَبَّبَ	اَحَبَّ
وَالتِّیْنِ	بِالتَّقْوٰی	اَلثَّاقِبُ	ثُجَّاجًا	فِی الْحَجِّ	شُحَّ
مُسَخَّرٰتٍ	صَدَّقَ	تَصَدّٰی	اَلدَّرَجٰتِ	مِنَ الدَّمْعِ	وَالذّٰكِرِیْنَ
اَلرَّحْمٰنُ	نُزِّلَ	فَسَنُیَسِّرُهٗ	وَالشَّمْسِ	نَقُصُّ	وَالصّٰلِحِیْنَ
فَضَّلْنَا	وَالضُّحٰی	وَالطُّوْرِ	وَالطَّیْرِ	اَلطَّلَاقُ	وَالظَّاهِرُ
لِلظّٰلِمِیْنَ	سُعِّرَتْ	یُوَفَّ	حُقَّتْ	حَقٌّ	رَكَّبَكَ
وَالَّذِیْنَ	مِمَّا	اُمَّةٍ	فَاُمُّهٗ	مُسَمًّی	جَنّٰتٍ

وَالنّٰشِطٰتِ	وَالنَّجْمِ	كُوِّرَتْ	مُّطَهَّرَةً	سُيِّرَتْ	يَذَّكَّرُ
لِيَدَّبَّرُوْا	ذُرِّيَّتَهٗ	مُزَّمِّلُ	مُدَّثِّرُ	عَلَى النَّبِيِّ	يَسَّمَّعُوْنَ
عِلِّيُّوْنَ	يَزَّكّٰى	مِنَ الطَّيِّبٰتِ	اِنَّ الظَّنَّ	مَدَّ الظِّلَّ	شَرِّ النَّفّٰثٰتِ
يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ	رَبُّ السَّمٰوٰتِ	اَحَطْتُّ	بَسَطْتَّ		
نَخْلُقْكُّمْ	قَدْ تَّبَيَّنَ	عَبَدْتُّمْ	اِذْ ظَّلَمُوْا	قَدْ دَّخَلُوْا	اِذْ ذَّهَبَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (14) : नून साकिन और तन्वीन (इदग़ाम, इक़्लाब)

(3) **इदग़ाम :** नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इदग़ाम होगा। " ر और ل " में बिग़ैर गुन्ना के और बाक़ी चार हुरूफ़ में गुन्ना के साथ। हुरूफ़े यर-मलून छ "6" हैं और वोह येह हैं : ى ، ر ، م ، ل ، و ، ن

(4) **इक़्लाब :** नून साकिन या तन्वीन के बा'द ह़र्फ़ ب आ जाए तो इक़्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़्फ़ा करें या'नी गुन्ना कर के पढ़ें।

इदग़ाम के हिज्जे इस त़रह़ करें जैसे مَنْ يَّقُوْلُ : مِيْم نُوْن ज़बर مَنْ ، يَا ज़बर يَ = مَنْ يَّ ، قَاف وَاو पेश قُوْ = مَنْ يَّقُوْ ، لَام पेश لُ = مَنْ يَّقُوْلُ

इक़्लाब के हिज्जे इस त़रह़ करें जैसे مِنْۢ بَعْدِ : مِيْم نُوْن ज़ेर مِنْ ، بَا عَيْن ज़बर بَعْ = مِنْۢ بَعْ ، دَال ज़ेर دِ = مِنْۢ بَعْدِ

مَنْ يَّقُوْلُ	مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ	مِنْ يَّوْمٍ	مِنْ وَّلِيٍّ

مِنْ مَّشْهَدٍ	مِنْ مِّثْلِهٖ	مِنْ نَّصِيْرٍ	مِنْ نُّطْفَةٍ
مِنْ رَّبِّكَ	مِنْ رَّبِّهِمْ	مِنْ لَّدُنْهُ	يَكُنْ لَّهٗ
كِتٰبًا يَّلْقٰهُ	رَجُلٌ يَّسْعٰى	هُدًى وَّذِكْرٰى	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ	سِرَاجًا مُّنِيْرًا	حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ	خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ	رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ	مُصَدِّقًا لِّمَا	وَيْلٌ لِّكُلِّ
مِنْۢ بَعْدِ	مِنْۢ بَقْلِهَا	اَنْۢبِئْهُمْ	لَيُنْۢبَذَنَّ
قَوْلًا بَلِيْغًا	خَبِيْرًا بَصِيْرًا	جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ	كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ
	حِلٌّ بِهٰذَا	صُمٌّۢ بُكْمٌ	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (15) : मीम साकिन के क़वाइद

- मीम साकिन के तीन क़ाइदे हैं। (1) इदग़ामे श-फ़वी (2) इख़्फ़ाए श-फ़वी (3) इज़्हारे श-फ़वी।
- (1) इदग़ामे श-फ़वी : مْ साकिन के बा'द दूसरी مِّ आ जाए तो مْ साकिन में इदग़ामे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।
- (2) इख़्फ़ाए श-फ़वी : مْ साकिन के बा'द हर्फ़ ب आ जाए तो مْ साकिन में इख़्फ़ाए श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना करेंगे।
- (3) इज़्हारे श-फ़वी : مْ साकिन के बा'द हर्फ़ ب और م के इलावा कोई भी हर्फ़ आ जाए तो مْ साकिन में इज़्हारे श-फ़वी होगा या'नी गुन्ना नहीं करेंगे।

اَنْتُمْ مُّظْلِمُوْنَ	اَلْوَتَرَ	كُنْتُمْ بِهٖ	هُمْ فِيْهَا
وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ	وَالْاَمْرُ	تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ	اَمْضٰى
اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ	لَمْ يَلِدْ	عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ	وَاَمْطَرْنَا
فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ	لَكُمْ دِيْنُكُمْ	تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ	اَلَمْ نَشْرَحْ
وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ	وَخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا	وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ	اَمْ صَبَرْنَا
لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى	ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ	بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ	عَلَيْهِمْ غَضَبٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (16) : तफ़्ख़ीम व तरक़ीक़

- तफ़्ख़ीम के मा'ना ह़र्फ़ को पुर या'नी मोटा पढ़ना और तरक़ीक़ के मा'ना ह़र्फ़ को बारीक पढ़ना है।
- तीन ह़ुरूफ़ اَلِف ، لَام ، رَا कभी पुर या'नी मोटे और कभी बारीक पढ़े जाते हैं।
- اَلِف : अलिफ़ से पहले अगर पुर ह़र्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को पुर और बारीक ह़र्फ़ आ जाए तो अलिफ़ को बारीक पढ़ें।
- لَام : इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَام से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَام को पुर पढ़ें और इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَام से पहले ह़र्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَام को बारीक पढ़ें।
- इस्मे जलालत (عَزَّوَجَلَّ) اَللّٰه के لَام के इलावा बाक़ी तमाम لَام बारीक पढ़ें।
- رَا को पुर पढ़ने की सूरतें : رَا पर ज़बर या पेश हो, رَا पर दो ज़बर या दो पेश हों, رَا पर खड़ा ज़बर हो,

ر साकिन से पहले ह़र्फ़ पर ज़बर या पेश हो, ر साकिन से पहले आ़रिज़ी ज़ेर हो, ر साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो, ر साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई ह़र्फ़ उसी कलिमे में हो।

- ر को बारीक पढ़ने की सूरतें : ر के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों, ر साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली उसी कलिमे में हो, ر साकिन से पहले یائے साकिना हो।
- आ़रिज़ी ह़-र-कत : क़ुरआने पाक में बा'ज़ कलिमात अलिफ़ से शुरूअ़ होते हैं और अलिफ़ पर कोई ह़-र-कत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी ह़-र-कत लगा कर पढ़ेंगे वोह ह़-र-कत आ़रिज़ी होगी जैसे ارْجِعِیْ के अलिफ़ के नीचे ज़ेर आ़रिज़ी है।

नोट : एक ही कलिमे में ر साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली हो और इस के बा'द ह़र्फ़े मुस्ता'लिया हो तो ر साकिन को पुर पढ़ेंगे जैसे مِرْصَادٍ

قَالَ	صِرَاطَ	سِرَاجًا	كَانَ	مَالًا	مَفَازًا
طَالِبُ	تَابُوْا	خَالِدًا	عَابِدُ	غَاسِقٍ	طَعَامٍ
اَللّٰهُ	وَاللّٰهُ	فَاللّٰهُ	اِنَّ اللّٰهَ	هُوَاللّٰهُ	مِنَ اللّٰهِ
رَسُوْلُ اللّٰهِ	رَضِیَ اللّٰهُ	قَالُوا اللّٰهُمَّ	لِلّٰهِ	بِاللّٰهِ	بِسْمِ اللّٰهِ
قُلِ اللّٰهُمَّ	مَاوٰىهُمُ	اِلَّا الَّذِیْنَ	اِنَّ الَّذِیْنَ	عَلٰى	صَلٰوةٌ
رَجُلٌ	اَلَمْ تَرَ	رُزِقُوْا	اَكْثَرُ	اَجْرًا	اَجْرُ
اِبْرٰهِیْمَ	عَرْشُ	اَمْ صَبَرْنَا	تُرْجَعُوْنَ	يُرْزَقُوْنَ	اِرْجِعْ
اِرْجِعُوْا	اِرْجِعِیْ	اِرْكَعُوْا	رَبِّ ارْحَمْهُمَا	رَبِّ ارْجِعُوْنِ	اِنِ ارْتَبْتُمْ
اَمِ ارْتَابُوْا	كُلُّ فِرْقٍ	فِرْقَةٍ	مِرْصَادٍ	فِیْ قِرْطَاسٍ	وَالنَّهَارِ
رِجَالٌ	اَمْرٍ	فَاصْبِرْ	قُمْ فَاَنْذِرْ	خَيْرٌ	نَذِيْرٌ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (17) : मद्दात

- मद के मा'ना दराज़ करना और खींचना है। मद के दो सबब हैं (1) हम्ज़ा ـٓءِ (2) सुकून ـْ
- मद की छ[6] अक़्साम हैं। (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आ़रिज़ (6) मद्दे लीन आ़रिज़।
- (1) मद्दे मुत्तशिल : हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा उसी कलिमे में हो तो मद्दे मुत्तसिल होगा। जैसे جَآءَ
- (2) मद्दे मुन्फ़शिल : हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ा दूसरे कलिमे में हो तो मद्दे मुन्फ़सिल होगा। जैसे يٰۤاَيُّهَا
- मद्दे मुत्तसिल और मद्दे मुन्फ़सिल को "दो, अढ़ाई अलिफ़" या'नी "चार या पांच ह़-रकात" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।
- (3) मद्दे लाज़िम : हुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ـّ ، ـْ) हो तो मद्दे लाज़िम होगा। जैसे جَآنٌّ
- (4) मद्दे लीन लाज़िम : हुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ـْ) हो तो मद्दे लीन लाज़िम होगा। जैसे عَيْنٌ
- मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को तीन, अलिफ़ या'नी "छ ह़-रकात" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।
- (5) मद्दे आ़रिज़ : हुरूफ़े मद्दा के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (या'नी वक़्फ़ की वज्ह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे आ़रिज़ होगा। जैसे مُسْلِمُوْنَ ۝
- (6) मद्दे लीन आ़रिज़ : हुरूफ़े लीन के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो (या'नी वक़्फ़ की वज्ह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए) तो मद्दे लीन आ़रिज़ होगा। जैसे شَفَتَيْنِ ۝
- मद्दे आ़रिज़ और मद्दे लीन आ़रिज़ को "एक, दो या तीन अलिफ़" या'नी "दो, चार या छ ह़-रकात" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।
- मद्दात के हिज्जे इस त़रह़ करें जैसे جَآئِیَ : جیم یا ज़ेर = جِیْ , ہمزہ ज़बर ءَ = جَآئِیَ
  ضَآلًّا : ضَادْ اَلِفْ لَامْ ज़बर = ضَآلَّ , لَامْ दो ज़बर لًا = ضَآلًّا

حَدَآئِقَ	اُولٰٓئِكَ	سِيِّـٰٓئَتُ	وَالّٰٓئِ	جَآئِیَ	جَآءَ
هٰۤؤُلَآءِ	يٰۤاَرْضُ	قَالُوْۤا اٰمَنَّا	بِمَآ اُنْزِلَ	اَوْلِيَآءَ	قُرُوْٓءٍ

یٰبَنِیٓ اِسۡرَآءِیۡلَ		ضَآلًّا	دَآبَّةٍ	آٰلۡـٰٔنَ	ءٰٓالذّٰكَرَیۡنِ
جَآنٌّ	مُدۡهَآمَّتٰنِ	اَتُحَآجُّوٓنِّیۡ	كَآفَّةً	اَلۡحَآقَّةُ	وَالصّٰٓفّٰتِ
حَآجُّوۡكَ	وَحَآجَّهٗ	تَحٰٓضُّوۡنَ	یُحَآدُّوۡنَ	اَنۡ یَّتَمَآسَّا	وَلَا الضَّآلِّیۡنَ
یٰۤاُولِی الۡاَلۡبَابِ ۝		یَتَسَآءَلُوۡنَ ۝	رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۝	خَوۡفٍ ۝	قُرَیۡشٍ ۝

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

सबक़ नम्बर (18) : हुरूफ़े मुक़त्तआत

- हुरूफ़े मुक़त्तआत क़ुरआने पाक की बा'ज़ सूरतों के शुरूअ़ में आते हैं ।
- इन हुरूफ़ को मुफ़रद हुरूफ़ की त़रह़ अलग अलग इस त़रह़ पढ़ें कि मद्दात की मिक़्दार पूरी अदा हो नीज़ इख़्फ़ा व इदग़ाम आने की सूरत में ग़ुन्ना भी करें ।
- الٓمّٓ ۚ اللّٰهُ को पढ़ने के दो त़रीक़े हैं (1) वस्ल اَلِفۡ لَآمۡ مِّیۡمَ اللّٰهُ (2) वक़्फ़ اَلِفۡ لَآمۡ مِّیۡمۡ ۚ اَللّٰهُ

صٓ صَآدۡ	قٓ قَآفۡ	نٓ نُوۡنۡ	طٰهٰ طَاهَا
یٰسٓ یَاسِیۡنۡ	طٰسٓ طَاسِیۡنۡ	حٰمٓ حَامِیۡمۡ	الٓرٰ اَلِفۡ لَآمۡ رَا
الٓمّٓ اَلِفۡ لَآمۡ مِّیۡمۡ	الٓمّٓرٰ اَلِفۡ لَآمۡ مِّیۡمۡ رَا	حٰمٓ حَامِیۡمۡ	عٓسٓقٓ عَیۡنۡ سِیۡنۡ قَآفۡ

كٓهٰيٰعٓصٓ	الٓمّٓ ۚ اللّٰهُ	الٓمّٓصٓ	طٰسٓمّٓ
كَافْ هَا يَا عَيْنْ صَادْ	اَلِفْ لَامْ مِّيْمْ ۚ اَللّٰهُ	اَلِفْ لَامْ مِّيْمْ صَادْ	طَا سِيْنْ مِّيْمْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (19) : ज़ाइद अलिफ़ "ا"

क़ुरआने पाक में बा'ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा "0" बना होता है। ऐसे अलिफ़ को "ज़ाइद अलिफ़" कहते हैं। इस अलिफ़ को पढ़ने या न पढ़ने की तफ़्सील येह हैं :

(1)..... इन छ[6] कलिमात में "ज़ाइद अलिफ़" को वक़्फ़ (या'नी रुकने की सूरत) में पढ़ेंगे लेकिन वस्ल (या'नी मिला कर पढ़ने की सूरत) में नहीं पढ़ेंगे।

اَنَا۟	قَوَارِيْرَا۟ पहला	السَّبِيْلَا۟	الرَّسُوْلَا۟	الظُّنُوْنَا۟	لٰكِنَّا۟
(हर जगह)	پ٢٩،سورةالدهر، ١٥	پ٢٢،الاحزاب، ٦٧	پ٢٢،الاحزاب، ٦٦	پ٢١،الاحزاب، ١٠	پ١٥،الكهف، ٣٨

(2)..... क़ुरआने पाक के इस एक कलिमे "سَلٰسِلَا۟ (پ٢٩،سورةالدهر،٤)" के "ज़ाइद अलिफ़" को वक़्फ़ में पढ़ना और न पढ़ना दोनों जाइज़ हैं। अलबत्ता वस्ल में इस ज़ाइद अलिफ़ को नहीं पढ़ेंगे।

(3)..... इन तमाम कलिमात में ज़ाइद अलिफ़ को वस्लन (या'नी मिला कर पढ़ने की सूरत में) और वक़्फ़न (या'नी रुकने की सूरत में) दोनों ए'तिबार से नहीं पढ़ेंगे।

لَا۟اِلَى الْجَحِيْمِ پ٢٣،الصّٰفّٰت، ٦٨	لَا۟اِلَى اللّٰهِ پ٤، اٰل عمران، ١٥٨	اَفَا۟ئِنْ مِّتَّ پ١٧،الانبياء، ٣٤	اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ پ٤، اٰل عمران، ١٤٤
وَلَا۟اَوْضَعُوْا پ١٠،التوبة، ٤٧	اَنْ تَبُوْٓءَا۟ پ٦، المائدة، ٢٩	مَلَا۟ئِهٖ (हर जगह)	لِشَا۟يْءٍ پ١٥،الكهف، ٢٣
وَمَلَا۟ئِهِمْ پ١١، يونس، ٨٣	مِنْ نَّبَا۟ئِ پ٧، الانعام، ٣٤	لَا۟اَنْتُمْ پ٢٨، الحشر، ١٣	لَا۟اَذْبَحَنَّهٗ پ١٩،النمل، ٢١
لِيَرْبُوَا۟ فِيْ پ٢١، الروم، ٣٩	لَنْ نَّدْعُوَا۟ پ١٥، الكهف، ١٤	لِتَتْلُوَا۟ پ١٣، الرعد، ٣٠	ثَمُوْدَا۟ پ٢٠، العنكبوت، ٣٨/پ١٢، هود، ٦٨ پ١٩، الفرقان، ٣٨/پ٢٧، النجم، ٥١
	قَوَارِيْرَا۟ दूसरा پ٢٩، الدهر، ١٦	وَنَبْلُوَا۟ پ٢٦، محمد، ٣١	لِيَبْلُوَا۟ پ٢٦، محمد، ٤

(4)..... इन तमाम कलिमात के लफ़्ज़े "اَنَا" में ज़ाइद अलिफ़ नहीं है लिहाज़ा इस अलिफ़ को पढ़ेंगे।

عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ	اَنَاسِيَّ	اَنَابُوْٓا	لِلْاَنَامِ	مَنْ اَنَابَ
پ٤، ال عمران ، ١١٩	پ١٩، الفرقان ، ٤٩	پ٢٣، الزمر ، ١٧	پ٢٧، الرحمٰن ، ١٠	پ١٣، الرعد ، ٢٧ پ٢١، لقمٰن ، ١٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (20) : मु-तफ़र्रिक़ क़वाइद

इज़्हारे मुत्लक़ : इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वज्ह से इदग़ाम नहीं बल्कि इज़्हारे मुत्लक़ होगा इस लिये इन चारों कलिमात में ग़ुन्ना न करें।

دُنْيَا	بُنْيَانٌ	صِنْوَانٌ	قِنْوَانٌ

सक्तह : आवाज़ रोक कर सांस लिये बिग़ैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे। इन चार कलिमात में सक्तह वाजिब है सक्ते का हुक्म यह है कि मु-तहर्रिक को साकिन किया जाए और दो ज़बर को अलिफ़ से बदल कर पढ़ा जाए।

وَقِيْلَ مَنْ سكتة رَاقٍ	كَلَّا بَلْ سكتة رَانَ	مِنْ مَّرْقَدِنَا سكتة هٰذَا	عِوَجًا سكتة قَيِّمًا
پ ٢٩ ، القيٰمة ٢٧	پ ٣٠ ، المطففين ١٤	پ ٢٣ ، يٰسٓ ٥٢	پ ١٥ ، الكهف ١

صٓ : क़ुरआने पाक में चार कलिमात صاد से लिखे जाते हैं और صاد पर बारीक سين भी लिखा होता है इन के पढ़ने की तफ़्सील इस तरह है : (1) और (2) में सिर्फ़ س पढ़ें, (3) में ص और س दोनों पढ़ना जाइज़ है, (4) में सिर्फ़ ص पढ़ें।

١ يَبْصُۜطُ	٢ بَصْۜطَةً	٣ اَمْ هُمُ الْمُصَۜيْطِرُوْنَ	٤ بِمُصَۜيْطِرٍ
پ ٢ ، البقرة ٢٤٥	پ ٨ ، الاعراف ٦٩	پ ٢٧ ، الطور ٣٧	پ ٣٠ ، الغاشية ٢٢

- **तस्हील :** तस्हील के मा'ना हैं नरमी करना या'नी दूसरे हम्ज़ा को नरमी के साथ पढ़ें । क़ुरआने पाक में सिर्फ़ एक कलिमे में तस्हील वाजिब है ।
- **इमालह :** ज़बर को ज़ेर की त़रफ़ और الف को یا की त़रफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं । इमालह की را को उर्दू के लफ़्ज़ क़त़रे की را की त़रह़ पढ़ें या'नी رَا नहीं बल्कि رے पढ़ें ।
- इमालह के हिज्जे इस त़रह़ करें : مِیْم جِیْم ज़बर= مَجْ, را इमाले वाली رے = مَجْرِ, ھا الف ज़बर ھا= مَجْرِھَا
- بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ इस कलिमे में لَام से पहले और لَام के बा'द दोनों الف न पढ़ें बल्कि لَام को ज़ेर दे कर पढ़ें ।

تسہیل	امالہ	
ءَاَعْجَمِیٌّ وَّعَرَبِیٌّ	مَجْرِھَا	بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ
پ ۲۴ ، حٰمٓ السجدہ ۴۴	پ ۱۲ ، ھود ۴۱	پ ۲۶ ، الحجرات ۱۱

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सबक़ नम्बर (21) : वक़्फ़

- **वक़्फ़ :** वक़्फ़ के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं । या'नी जिस कलिमे पर वक़्फ़ करें तो उस कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर आवाज़ और सांस दोनों को ख़त्म कर दें ।
- कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर, दो पेश, खड़ा ज़ेर, उल्टा पेश हो तो उस ह़र्फ़ को वक़्फ़ में साकिन कर दें ।
- कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर हों तो उन्हें वक़्फ़ में अलिफ़ से बदल दें ।
- कलिमे के आख़िर में गोल ة "ۃ" पर ख़्वाह कोई भी ह़-र-कत हो या तन्वीन उसे वक़्फ़ में ھا साकिन "ہْ" से बदल दें ।
- खड़ा ज़बर, ह़ुरूफ़े मद्दा और साकिन ह़र्फ़ वक़्फ़ में तब्दील नहीं होते ।
- मुशद्दद ह़र्फ़ पर वक़्फ़ की सूरत में तश्दीद बाक़ी रखें मगर ह़-र-कत को ज़ाहिर न होने दें ।
- **नून क़ुत़्नी :** तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है इसे नून क़ुत़्नी कहते हैं ।

नून कुत़्नी वाले कलिमात के हिज्जे इस त़रह़ करेंगे : जैसे شِیْئًا ؚنِ السَّمَآءُ = شین या ज़ेर شِیْ , با दो ज़बर
شِیْئًا ؚنِ السَّمَآءِ = اَلسَّمَآءُ = ءُ पेश همزه , اَلسَّمَا = مَا ज़बर میم الف , اَلسَّ = سَ ज़बर سین , اَسُ , ज़बर همزه سین , شِیْئًا = بًا

अ़लामाते वक़्फ़ : चन्द अ़लामाते वक़्फ़ की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

- **o** : येह **वक़्फ़े ताम** और आयत मुकम्मल होने की अ़लामत है **यहां ठहरना चाहिये।**
- **م** : येह **वक़्फ़े लाज़िम** की अ़लामत है **यहां ज़रूर ठहरना चाहिये।**
- **ط** : येह **वक़्फ़े मुत़्लक़** की अ़लामत है **यहां ठहरना बेहतर है।**
- **ج** : येह **वक़्फ़े जाइज़** की अ़लामत है **यहां ठहरना बेहतर** और **न ठहरना भी जाइज़ है।**
- **ز** : येह **वक़्फ़े मुजव्वज़** की अ़लामत है **यहां ठहरना जाइज़** मगर **न ठहरना बेहतर है।**
- **ص** : येह **वक़्फ़े मुरख़्ख़स** की अ़लामत है **यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।**
- **لا** : अगर आयत के ऊपर ۙ लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है आयत के इलावा **لا** लिखा हो तो न ठहरें।

इआ़दह : वक़्फ़ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआ़दह कहते हैं।

بِالْحَقِّ ۙ بِالْحَقّ ۙ	شَفَتَيْنِ o شَفَتَيْن o	فِيْهِ ط فِيْه ط	مُسْتَقِيْمَ o مُسْتَقِيْم o	نٰدِمِيْنَ o نٰدِمِيْن o	صٰدِقِيْنَ o صٰدِقِيْن o
قِسْطِ ج قِسْط ج	شَیْءٍ ط شَیْء ط	شَهْرٍ o شَهْر o	مِنْ قَبْلُ ج مِنْ قَبْل ج	يَشَآءُ ط يَشَآء ط	نَسْتَعِيْنُ o نَسْتَعِيْن o
بِاَمْرِهٖ o بِاَمْرِه o	عِبَادِهٖ o عِبَادِه o	بِهٖ ج بِه ج	بَرْقٌ ج بَرْق ج	قَدِيْرٌ o قَدِيْر o	لَهٗ ط لَه ط
نَبِيًّا o نَبِيَّا o	عِلْمًا o عِلْمَا o	اَلْفَافًا o اَلْفَافَا o	مَوَازِيْنُهٗ o مَوَازِيْنُه o	اَخْلَدَهٗ o اَخْلَدَه o	رَبَّهٗ o رَبَّه o

قُوَّةً ط قُوَّةً ط	رَقَبَةٍ ۝ رَقَبَةٍ ۝	جَارِيَةٌ ۝ جَارِيَةٌ ۝	وَتَوَلّٰى ۝ وَتَوَلّٰى ۝	مِنَ الْاُوْلٰى ۝ مِنَ الْاُوْلٰى ۝	فَتَرْضٰى ۝ فَتَرْضٰى ۝
وَانْحَرْ ۝ وَانْحَرْ ۝	فَارْغَبْ ۝ فَارْغَبْ ۝	فَحَدِّثْ ۝ فَحَدِّثْ ۝	فِيْهَا ط فِيْهَا ط	تَهْتَدُوْا ؏ تَهْتَدُوْا ؏	قَوْلِيْ ۝ قَوْلِيْ ۝

خَيْرَا ۨ اِلْوَصِيَّةُ خَيْرَا ۨ اَلْوَصِيَّةُ	شِيْئًا ۨ اِلسَّمَآءِ شِيْئًا ۨ اَلسَّمَآءِ	مُنِيْبِ ۝ اِدْخُلُوْهَا مُنِيْبِ ۝ اُدْخُلُوْهَا
مُبِيْنِ ۨ اِقْتُلُوْا مُبِيْنِ ۨ اُقْتُلُوْا	قَدِيْرُ ۝ اِلَّذِيْ قَدِيْرُ ۝ اَلَّذِيْ	خَبِيْرًا ۝ اِلَّذِيْ خَبِيْرًا ۝ اَلَّذِيْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सबक़ नम्बर (22) : नमाज़

- इस सबक़ को हिज्जे और रवां दोनों त़रीक़ों से पढ़ें ।
- इस सबक़ में भी पिछले तमाम अस्बाक़ के क़वाइद और हुरूफ़ की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखें बिल ख़ुसूस हुरूफ़े क़रीबुस्सौत या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले हुरूफ़ में वाज़ेह़ फ़र्क़ करें ।
- याद रखिये ! इन हुरूफ़ में फ़र्क़ न करने की वज्ह से अगर मा'ना फ़ासिद हो गए तो नमाज़ न होगी ।

तक्बीरे तह़रीमा : اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

सना : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

तअ़व्वुज़ : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

तस्मिय्यह : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

सू-रतुल फ़ातिहा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ○ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ○
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ○ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ؕ○ اٰمِيْن

सू-रतुल इख़्लास : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ○ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ○ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ○ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ؕ○

तस्बीहे रुकूअ : سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

तस्मीअ : سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

तहमीद : رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

तस्बीहे सज्दा : سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

तशह्हुद :

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ○
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ؕ

दुरूदे इब्राहीम : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

दुआए मासूरह : اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۝

सलाम : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

दुआए कुनूत : اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ۘ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ۝

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुवाल व जवाब

सुवाल नं. 1 **हुरूफ़े मुफ़रदात** कितने हैं ? सबक़ नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े मुफ़रदात **29** हैं।

सुवाल नं. 2 **हुरूफ़े मुस्ता'लिया** कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 1

जवाब हुरूफ़े मुस्ता'लिया सात हैं और वोह येह हैं ۔ خ ، ص ، ض ، ط ، ظ ، غ ، ق

सुवाल नं. 3 **हुरूफ़े मुस्ता'लिया** को कैसे पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ़ क्या है ? सबक़ नम्बर 1

जवाब **हुरूफ़े मुस्ता'लिया** को हमेशा हर ह़ालत में पुर या'नी मोटा पढ़ते हैं और इन का मज्मूआ़ خُصَّ ضَغْطٍ قِظْ है।

सुवाल नं. 4 **होंटों से अदा होने वाले हुरूफ़ कितने हैं और कौन कौन से हैं ?** सबक़ नम्बर 1

जवाब **होंटों से अदा होने वाले हुरूफ़ चार हैं : ب ، ف ، م ، و**

सुवाल नं. 5 **ह़रूफ़े सफ़ीरिया या'नी सीटी वाले हुरूफ़ कितने हैं और कौन कौन से हैं ?** सबक़ नम्बर 1

जवाब **ह़रूफ़े सफ़ीरिया या'नी सीटी वाले हुरूफ़ तीन हैं। ز ، س ، ص**

सुवाल नं. 6 **ह़-रकात** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 3

जवाब ज़बर ـَـ , ज़ेर ـِـ , पेश ـُـ को ह़-रकात कहते हैं।

सुवाल नं. 7 **ह़-रकात** को किस त़रह़ पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 3

जवाब ह़-रकात को बिग़ैर खींचे, बिग़ैर झटका दिये मा'रूफ़ पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 8 **हुरूफ़े क़रीबुस्सौत कितने हैं और कौन कौन से हैं ?** सबक़ नम्बर 4

जवाब हुरूफ़े क़रीबुस्सौत सोलह "16" हैं : (ت،ط)،(ز،ذ،ظ)،(ث،س،ص)،(د،ض)(ك،ق)،(ہ،ح)،(ء،ع)

सुवाल नं. 9 **तन्वीन** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 5

जवाब दो ज़बर ـًـ , दो ज़ेर ـٍـ और दो पेश ـٌـ को तन्वीन कहते हैं। तन्वीन नून साकिन होता है जो कलिमे के आख़िर में आता है इस लिये तन्वीन की आवाज़ नून साकिन की त़रह़ होती है।

सुवाल नं. 10 **हुरूफ़े मद्दा** कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 7

जवाब हुरूफ़े मद्दा तीन हैं और वोह येह हैं اَلِف ، وَآوْ ، يَا

सुवाल नं.11 اَلِف मद्दा, وَآوْ मद्दा और يَا मद्दा कब होगा ? सबक़ नम्बर 7

जवाब اَلِف से पहले ज़बर हो तो اَلِف मद्दा, وَآوْ साकिन से पहले पेश हो तो وَآوْ मद्दा, يَا साकिन से पहले ज़ेर हो तो يَا मद्दा होगा।

सुवाल नं.12 हुरूफ़े मद्दा को कैसे पढ़ते हैं ? सबक़ नम्बर 7

जवाब हुरूफ़े मद्दा को एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल नं.13 खड़ी ह़-रकात किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 8

जवाब खड़े ज़बर ـٰ , खड़े ज़ेर ـٖ और उल्टे पेश ـٗ को खड़ी ह़-रकात कहते हैं।

सुवाल नं.14 खड़ी ह़-रकात को कैसे पढ़ते हैं ? सबक़ नम्बर 8

जवाब खड़ी ह़-रकात को हुरूफ़े मद्दा की त़रह़ एक अलिफ़ या'नी दो ह़-रकात के बराबर खींच कर पढ़ते हैं।

सुवाल नं.15 हुरूफ़े लीन कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 9

जवाब हुरूफ़े लीन दो हैं وَآوْ और يَا ।

सुवाल नं.16 हुरूफ़े लीन को किस त़रह़ पढ़ते हैं ? सबक़ नम्बर 9

जवाब हुरूफ़े लीन को बिग़ैर खींचे बिग़ैर झटका दिये नरमी से मा'रूफ़ पढ़ते हैं।

सुवाल नं.17 وَآوْ लीन और يَا लीन कब होगा ? सबक़ नम्बर 9

जवाब وَآوْ साकिन से पहले ज़बर हो तो وَآوْ लीन और يَا साकिन से पहले ज़बर हो तो يَا लीन होगा।

सुवाल नं.18 क़ल्क़ला के क्या मा'ना हैं ? सबक़ नम्बर 11

जवाब क़ल्क़ला के मा'ना जुम्बिश और ह़-र-कत के हैं या'नी इन हुरूफ़ के अदा होते वक़्त मख़्रज में जुम्बिश सी होती है जिस की वजह से आवाज़ लौटती हुई निकलती है।

सुवाल नं.19 हुरूफ़े क़ल्क़ला कितने हैं, कौन कौन से हैं और इन का मज्मूआ़ क्या है ? सबक़ नम्बर 11

जवाब हुरूफ़े क़ल्क़ला पांच हैं और वोह येह हैं ق ، ط ، ب ، ج ، د हुरूफ़े क़ल्क़ला का मज्मूआ़ قُطْبُ جَدٍّ है।

सुवाल नं.20 हुरूफ़े क़ल्क़ला में कब क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा ? सबक़ नम्बर 11

जवाब जब हुरूफ़े क़ल्क़ला साकिन हों तो उन में क़ल्क़ला ख़ूब ज़ाहिर होगा।

सुवाल नं.21 अगर क़ल्क़ला हुरूफ़ मुशद्दद हों तो उन्हें कैसे पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 11

जवाब जब क़ल्क़ला हुरूफ़ मुशद्दद हों तो उन्हें जमाव के साथ अदा करेंगे।

सुवाल नं. 22 **हम्ज़ए साकिना** (أْ ، ءْ) को कैसे पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 11

जवाब हम्ज़ए साकिना (أْ ، ءْ) को हमेशा झटका दे कर पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 23 **नून साकिन** और **तन्वीन** के कितने क़ाइदे हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के चार क़ाइदे हैं और वोह येह हैं **इज़्हार, इख़्फ़ा, इदग़ाम, इक़्लाब।**

सुवाल नं. 24 **इज़्हार** का क़ाइदा सुनाएं ? सबक़ नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े ह़ल्क़ी में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इज़्हार होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल नं. 25 **हुरूफ़े ह़ल्क़ी** कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 12

जवाब हुरूफ़े ह़ल्क़ी छ 6 हैं और वोह येह हैं ء ، ہ ، ع ، ح ، غ ، خ -

सुवाल नं. 26 **इख़्फ़ा** का क़ाइदा सुनाएं ? सबक़ नम्बर 12

जवाब नून साकिन और तन्वीन के बा'द हुरूफ़े इख़्फ़ा में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इख़्फ़ा होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन में गुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 27 **हुरूफ़े इख़्फ़ा** कितने हैं और कौन कौन से हैं ? सबक़ नम्बर 12

जवाब हुरूफ़े इख़्फ़ा पन्दरह हैं और वोह येह हैं

ت ، ث ، ج ، د ، ذ ، ز ، س ، ش ، ص ، ض ، ط ، ظ ، ف ، ق ، ک -

सुवाल नं. 28 **तश्दीद** किसे कहते हैं और तश्दीद वाले ह़र्फ़ को क्या कहते हैं ? सबक़ नम्बर 13

जवाब तीन दन्दान ّ वाली शक्ल को तश्दीद कहते हैं जिस ह़र्फ़ पर तश्दीद हो उसे मुशद्दद कहते हैं।

सुवाल नं. 29 نّ **मुशद्दद** और مّ **मुशद्दद** में क्या होगा ? सबक़ नम्बर 13

जवाब نّ मुशद्दद और مّ मुशद्दद में हमेशा गुन्ना होगा।

सुवाल नं. 30 गुन्ना किसे कहते हैं और इस की मिक़्दार क्या है ? सबक़ नम्बर 13

जवाब नाक में आवाज़ ले जा कर पढ़ने को गुन्ना कहते हैं गुन्ना की मिक़्दार एक अलिफ़ के बराबर है।

सुवाल नं. 31 मुशद्दद ह़र्फ़ को किस त़रह़ पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 13

जवाब मुशद्दद ह़र्फ़ को दो[2] मर्तबा पढ़ेंगे एक मर्तबा अपने से पहले वाले मु-तह़र्रिक ह़र्फ़ से मिला कर और दूसरी मर्तबा ख़ुद अपनी ह़-र-कत के मुत़ाबिक़ ज़रा रुक कर।

सुवाल नं. 32 इदग़ाम का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 14

जवाब नून साकिन या तन्वीन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून में से कोई ह़र्फ़ आ जाए तो इदग़ाम होगा। ر और ل में बिग़ैर ग़ुन्ना के बाक़ी चार में ग़ुन्ना के साथ।

सुवाल नं. 33 हुरूफ़े यर-मलून कितने हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 14

जवाब हुरूफ़े यर-मलून छ[6] हैं और वोह येह हैं: ی، ر، م، ل، و، ن

सुवाल नं. 34 इक़्लाब का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 14

जवाब नून साकिन या तन्वीन के बा'द ह़र्फ़ ب आ जाए तो इक़्लाब होगा या'नी नून साकिन और तन्वीन को मीम से बदल कर इख़्फ़ा करेंगे या'नी ग़ुन्ना कर के पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 35 मीम साकिन के कितने क़ाइदे हैं और वोह कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 15

जवाब मीम साकिन के तीन क़ाइदे हैं और वोह येह हैं इदग़ामे श-फ़वी, इख़्फ़ाए श-फ़वी, इज़्हारे श-फ़वी।

सुवाल नं. 36 इदग़ामे श-फ़वी का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब मीम साकिन के बा'द दूसरी م आ जाए तो मीम साकिन में इदग़ामे श-फ़वी होगा या'नी ग़ुन्ना करेंगे।

सुवाल नं. 37 इख़्फ़ाए श-फ़वी का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब मीम साकिन के बा'द ب आ जाए तो मीम साकिन में इख़्फ़ाए श-फ़वी होगा या'नी ग़ुन्ना करेंगे।

सुवाल नं. 38 इज़्हारे श-फ़वी का क़ाइदा सुनाएं? सबक़ नम्बर 15

जवाब मीम साकिन के बा'द ب और م के इलावा कोई भी ह़र्फ़ आ जाए तो मीम साकिन में इज़्हारे श-फ़वी होगा या'नी ग़ुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल नं. 39 तफ़्ख़ीम व तरक़ीक़ के क्या मा'ना हैं? सबक़ नम्बर 16

जवाब तफ़्ख़ीम के मा'ना ह़र्फ़ को पुर पढ़ना और तरक़ीक़ के मा'ना ह़र्फ़ को बारीक पढ़ना है।

सुवाल नं. 40 इस्मे जलालत अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के لام को कब पुर और कब बारीक पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 16

जवाब इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो तो इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام को पुर पढ़ेंगे और इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام से पहले हर्फ़ के नीचे ज़ेर हो तो इस्मे जलालत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के لام को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल नं.41 اَلِفْ को कब **पुर** और कब **बारीक** पढ़ेंगे? सबक़ नम्बर 16

जवाब الف से पहले पुर हर्फ़ आ जाए तो الف को पुर और बारीक हर्फ़ आ जाए तो الف को बारीक पढ़ेंगे।

सुवाल नं.42 را को **पुर** पढ़ने की सूरतें बताएं? सबक़ नम्बर 16

जवाब (1) را पर ज़बर या पेश हो (2) را पर दो ज़बर या दो पेश हो (3) را पर खड़ा ज़बर हो (4) را साकिन से पहले हर्फ़ पर ज़बर या पेश हो (5) را साकिन से पहले आ़रिज़ी ज़ेर हो (6) را साकिन से पहले ज़ेर दूसरे कलिमे में हो (7) را साकिन के बा'द हुरूफ़े मुस्ता'लिया में से कोई हर्फ़ इसी कलिमे में हो तो इन सब सूरतों में را को **पुर** पढ़ेंगे।

सुवाल नं.43 را को **बारीक** पढ़ने की सूरतें बताएं? सबक़ नम्बर 16

जवाब (1) را के नीचे ज़ेर या दो ज़ेर हों (2) را साकिन से पहले ज़ेरे अस्ली इसी कलिमे में हो (3) را साकिन से पहले یائے साकिना हो तो इन सब सूरतों में را को **बारीक** पढ़ेंगे।

सुवाल नं.44 **आ़रिज़ी ज़ेर** किसे कहते हैं? सबक़ नम्बर 16

जवाब क़ुरआने पाक में बा'ज़ कलिमात अलिफ़ से शुरूअ़ होते हैं और अलिफ़ पर कोई ह़-र-कत नहीं होती उन अलिफ़ पर जो भी ह़-र-कत लगा कर पढ़ेंगे वोह आ़रिज़ी ह़-र-कत होगी जैसे اِرْجِعِیْ के الف के नीचे **ज़ेरे आ़रिज़ी** है।

सुवाल नं.45 **मद** के क्या मा'ना हैं इस के कितने सबब हैं और कौन कौन से हैं? सबक़ नम्बर 17

जवाब **मद** के मा'ना दराज़ करना और खींचना है **मद** के सबब दो "**2**" हैं (1) हम्ज़ह (2) सुकून।

सुवाल नं.46 **मद** की कितनी क़िस्में हैं और कौन कौन सी हैं? सबक़ नम्बर 17

जवाब **मद** की छ "**6**" क़िस्में हैं और वोह येह हैं (1) मद्दे मुत्तसिल (2) मद्दे मुन्फ़सिल (3) मद्दे लाज़िम (4) मद्दे लीन लाज़िम (5) मद्दे आ़रिज़ (6) मद्दे लीन आ़रिज़।

सुवाल नं.47 **मद्दे मुत्तसिल** कब होगा? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह इसी कलिमे में हो तो **मद्दे मुत्तसिल** होगा।

सुवाल नं. 48 **मद्दे मुन्फ़सिल** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द हम्ज़ह दूसरे कलिमे में हो तो **मद्दे मुन्फ़सिल** होगा।

सुवाल नं. 49 **मद्दे मुत्तसिल** और **मद्दे मुन्फ़सिल** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब **मद्दे मुत्तसिल** और **मद्दे मुन्फ़सिल** को " दो, अढ़ाई अलिफ़" या'नी "चार या पांच ह़-रकात" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।

सुवाल नं. 50 **मद्दे लाज़िम** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द सुकूने अस्ली (ـّـ ، ـْـ) हो तो **मद्दे लाज़िम** होगा।

सुवाल नं. 51 **मद्दे लीन लाज़िम** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े लीन के बा'द सुकूने अस्ली (ـْـ) हो तो **मद्दे लीन लाज़िम** होगा।

सुवाल नं. 52 **मद्दे लाज़िम** और **मद्दे लीन लाज़िम** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब **मद्दे लाज़िम और मद्दे लीन लाज़िम को तीन, अलिफ़ या'नी "छ ह़-रकात" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।**

सुवाल नं. 53 **मद्दे आ़रिज़** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े मद्दा के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए तो **मद्दे आ़रिज़** होगा।

सुवाल नं. 54 **मद्दे लीन आ़रिज़** कब होगा ? सबक़ नम्बर 17

जवाब हुरूफ़े लीन के बा'द आ़रिज़ी सुकून हो या'नी वक़्फ़ की वजह से कोई ह़र्फ़ साकिन हो जाए तो **मद्दे लीन आ़रिज़** होगा।

सुवाल नं. 55 **मद्दे आ़रिज़** और **मद्दे लीन आ़रिज़** को कितना खींच कर पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 17

जवाब **मद्दे आ़रिज़** और **मद्दे लीन आ़रिज़** को "**एक, दो या तीन अलिफ़**" या'नी "**दो, चार या छ ह़-रकात**" की मिक़्दार तक खींच कर पढ़ें।

सुवाल नं. 56 **ज़ाइद अलिफ़** किसे कहते हैं और क्या उसे पढ़ते हैं ? सबक़ नम्बर 19

जवाब क़ुरआने पाक में बा'ज़ जगह अलिफ़ पर गोल दाएरा " ० " का निशान होता है ऐसे अलिफ़ को ज़ाइद अलिफ़ कहते हैं और इस अलिफ़ को नहीं पढ़ते।

सुवाल नं. 57 دُنْيَا، بُنْيَانٌ، صِنْوَانٌ और قِنْوَانٌ के नून साकिन में कौन सा क़ाइदा होगा ? सबक़ नम्बर 20

जवाब इन चार कलिमात में नून साकिन के बा'द हुरूफ़े यर-मलून एक कलिमे में आने की वजह से इदग़ाम नहीं बल्कि **इज़्हारे मुत्लक़** होगा इस लिये इन कलिमात में गुन्ना नहीं करेंगे।

सुवाल नं. 58 **सक्तह** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 20

जवाब आवाज़ रोक कर सांस लिये बिग़ैर आगे पढ़ने को सक्तह कहते हैं या'नी आवाज़ रुक जाए और सांस जारी रहे।

सुवाल नं. 59 **तस्हील** के क्या मा'ना हैं ? सबक़ नम्बर 20

जवाब तस्हील के मा'ना नरमी करना है या'नी दूसरे हम्ज़ह को नरमी के साथ पढ़ना।

सुवाल नं. 60 **इमालह** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 20

जवाब ज़बर को ज़ेर और الف को یَا की त़रफ़ माइल कर के पढ़ने को इमालह कहते हैं।

सुवाल नं. 61 **इमालह** की را को किस त़रह़ पढ़ेंगे ? सबक़ नम्बर 20

जवाब **इमालह** की را को उर्दू के लफ़्ज़ क़त़रे की را की त़रह़ पढ़ेंगे। या'नी ری नहीं बल्कि رے पढ़ेंगे।

सुवाल नं. 62 **वक़्फ़** के क्या मा'ना हैं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब **वक़्फ़** के मा'ना ठहरने और रुकने के हैं।

सुवाल नं. 63 **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो क्या करेंगे ? सबक़ नम्बर 21

जवाब **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर ज़बर, ज़ेर, पेश, दो ज़ेर या दो पेश हों तो उस ह़र्फ़ को साकिन कर देंगे।

सुवाल नं. 64 **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो क्या करेंगे ? सबक़ नम्बर 21

जवाब **वक़्फ़** की ह़ालत में कलिमे के आख़िरी ह़र्फ़ पर दो ज़बर की तन्वीन हो तो उसे अलिफ़ से बदल देंगे।

सुवाल नं. 65 **वक़्फ़** की ह़ालत में गोल ۃ "ۃ" हो तो क्या करेंगे ? सबक़ नम्बर 21

जवाब गोल ۃ "ۃ" पर ख़्वाह कोई भी ह़-र-कत हो उसे **वक़्फ़** में ھا साकिन "ہْ" से बदल देंगे।

सुवाल नं. 66 **नून कुत़्नी** किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब तन्वीन के बा'द हम्ज़ए वस्ली आ जाए तो वस्ल में हम्ज़ए वस्ली को गिराते हुए तन्वीन के नून साकिन को ज़ेर दे कर एक छोटा सा नून लिख दिया जाता है उसे नून कुत़्नी कहते हैं।

सुवाल नं. 67 गोल दाएरा "ο" वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ?

सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े ताम** और **आयत मुकम्मल** होने की अ़लामत है। इस पर ठहरना चाहिये।

सुवाल नं. 68 م वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े लाज़िम** की अ़लामत है यहां ज़रूर ठहरना चाहिये।

सुवाल नं. 69 ط वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े मुत़्लक़** की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर है।

सुवाल नं. 70 ج वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े जाइज़** की अ़लामत है यहां ठहरना बेहतर और न ठहरना भी जाइज़ है।

सुवाल नं. 71 ز वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े मुजव्वज़** की अ़लामत है यहां ठहरना जाइज़ मगर न ठहरना बेहतर है।

सुवाल नं. 72 ص वक़्फ़ की कौन सी अ़लामत है और इस पर क्या करना चाहिये ? सबक़ नम्बर 21

जवाब येह **वक़्फ़े मुरख़्ख़स** की अ़लामत है यहां मिला कर पढ़ना चाहिये।

सुवाल नं. 73 لا पर वक़्फ़ की वज़ाहत फ़रमाएं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब अगर आयत के ऊपर لا "ۤلاۤ ο" लिखा हो तो ठहरने और न ठहरने में इख़्तिलाफ़ है आयत के इलावा لا लिखा हो तो न ठहरें।

सुवाल नं. 74 इआ़दह किसे कहते हैं ? सबक़ नम्बर 21

जवाब वक़्फ़ करने के बा'द पीछे से मिला कर पढ़ने को इआ़दह कहते हैं।

सुवाल नं. 75 सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये कौन सा वज़ीफ़ा पढ़ना चाहिये ? सफ़्हा नम्बर 7

जवाब सुन्नतों का पाबन्द और नेक बनन के लिये चलते फिरते يَا خَبِيْرُ पढ़ना चाहिये।

सुवाल नं. 76 इ़ल्म के पांच द-रजात कौन कौन से हैं ? सफ़्हा नम्बर 7

जवाब इ़ल्म के पांच द-रजात येह हैं (1) ख़ामोशी (2) तवज्जोह से सुनना (3) जो सुना उसे याद रखना

(4) जो सीखा उस पर अ़मल करना (5) जो इ़ल्म ह़ासिल हुवा उसे दूसरों तक पहुंचाना।

सुवाल नं. 77 ह़ाफ़िज़े की मज़्बूती का वज़ीफ़ा बताइये ? सफ़ह़ा नम्बर 12

जवाब يَا عَلِيْمُ 21 बार (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के 40 रोज़ तक नहार मुंह पीने (या पिलाने) से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (पीने वाले का) ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत होगा।

सुवाल नं. 78 सबक़ याद करने से पहले कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

जवाब सबक़ याद करने से पहले अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَ الْاِكْرَام पढ़नी चाहिये।

सुवाल नं. 79 वुज़ू के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब वुज़ू के चार फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. पूरा चेहरा धोना 2. कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना 3. चौथाई सर का मस्ह़ करना 4. टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना।

सुवाल नं. 80 ग़ुस्ल के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. कुल्ली करना 2. नाक में पानी चढ़ाना 3. तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना।

सुवाल नं. 81 तयम्मुम के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब तयम्मुम के तीन फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं 1. निय्यत 2. सारे मुंह पर हाथ फैरना 3. कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना।

सुवाल नं. 82 नमाज़ की कितनी शराइत़ हैं और कौन कौन सी हैं ?

जवाब नमाज़ की छ शराइत़ हैं और वोह येह हैं (1) त़हारत (2) सित्रे औ़रत (3) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा।

सुवाल नं. 83 नमाज़ के कितने फ़राइज़ हैं और कौन कौन से हैं ?

जवाब नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं और वोह येह हैं !

(1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़

(5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बि सुन्इ़ही।

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी (دامت برکاتہم العالیہ)

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे
क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

हो जाया करे याद सबक़ जल्द इलाही !
मौला तू मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत बना दे

सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सवेरे
तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह ! लगा दे

हो मद्रसे का मुझ से न नुक़्सान कभी भी
अल्लाह ! यहां के मुझे आदाब सिखा दे

छुट्टी न करूं भूल के भी मद्रसे की मै
अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे

उस्ताद हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़
आ़दत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे

ख़स्लत हो मेरी दूर शरारत की इलाही !
सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे

उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इत़ाअ़त
मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा दे

कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़
मौला तू मदीना मेरे सीने को बना दे

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही
बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह ! इबादत में मेरे दिल को लगा दे

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

हर काम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मैं करूं काश !
या रब तू मुबल्लिग़ मुझे सुन्नत का बना दे

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं
अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

उस्ताद हों, मां बाप हों, अ़त्तार भी हो साथ
यूं ह़ज को चलें और मदीना भी दिखा दे

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मख़ारिजे हुरूफ़ का नक़्शा

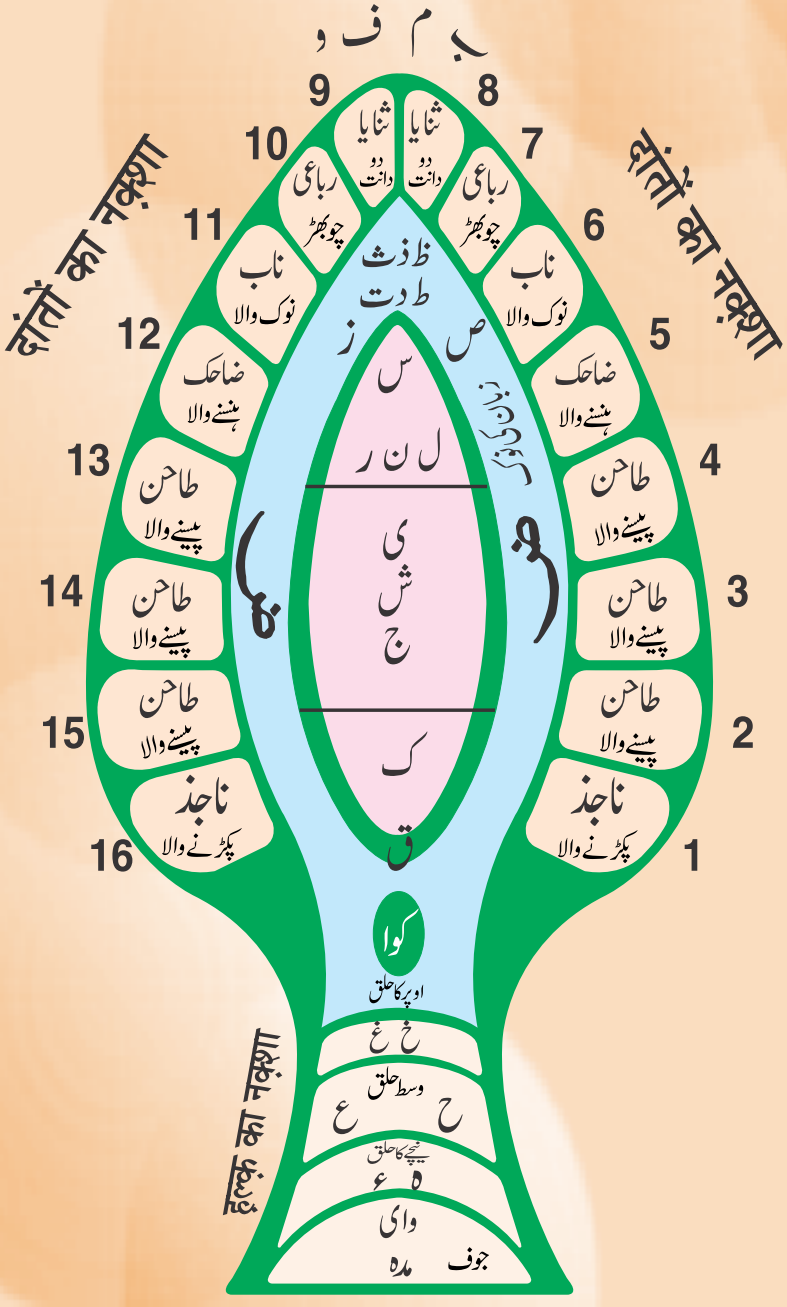

म-दनी मुन्नों के लिये बुन्यादी इस्लामी मा'लूमात पर मुश्तमिल मुन्फ़रिद किताब

इस्लाम की बुन्यादी बातें

(हिस्सा - 1)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह्रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया मह्ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net